तज़किरा

(तिमाही)

تذکرہ

(سہ ماہی)

जुलाई 2026-सितंबर 2026/ वर्ष -1 अंक - 4 मूल्य : ₹100

TAZKIRA

तज़किरा

تذکرہ
(سہ ماہی)

अंक–4 व 5, वर्ष–1/2

प्रधान संपादक	:	असग़र मेहदी
संपादक (कला एवं संस्कृति)	:	शहज़ाद रिज़वी
संपादक मण्डल	:	नदीम हसनैन,
	:	राकेश कुमार मिश्र,
	:	कौशल किशोर,
	:	डॉ० बिभाष कुमार श्रीवास्तव
	:	वीरेंद्र त्रिपाठी, (क़ानूनी सलाहकार)
	:	अलीज़ा मेहदी,
	:	ज़ाहिद ख़ान

संपादन, संचालन, प्रबंधक, अवैतनिक

लेज़र टाइप सेटिंग	:	डीप इंक पब्लीकेशंस, लखनऊ
मूल्य	:	₹100.00
वार्षिक सदस्यता	:	₹400.00
संपर्क	:	फ़र्स्ट फ़्लोर सी बी चैंबर्स, वी मार्ट के सामने, तहसीन गंज तिराहा, हरदोई रोड, लखनऊ 226003
फ़ोन नंबर	:	9792577777, 9415692469
ई–मेल	:	asgharmehdi15@gmail.com, shahzadrizvi1961@gmail.com

इस अंक में प्रकाशित सामग्री/रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं, उनसे तज़किरा की सहमति ज़रूरी नहीं है।

अंक में प्रकाशित सामग्री के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं।

डीप इंक पब्लीकेशंस, लखनऊ द्वारा लखनऊ से तज़किरा के लिए प्रकाशित

समस्त क़ानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश होगा।

अनुक्रम

संपादकीय 3

इज़हार 9

विमर्श

द सैटेनिक वर्सेस, ओरिएंटलिज़्म और इस्लाम की एंग्लो-सैक्सन समझ: पार्ट-2 40

असग़र मेहदी

गांधी और जिन्नाह संवाद : क़ौमियत की बुनियाद का त'अय्युन 65

मुहम्मद आमिर

ऋगवेदिक काल – एक क़बीलाई तहज़ीब 112

राकेश कुमार मिश्रा

प्रतिरोध का अप्रतिम नायक : टीपू सुल्तान 118

रमेश दीक्षित

खिराज-ए-तहसीन आह – वीर जी 132

- *अशोक वर्मा*

अदब व साहित्य

अंजुमन तरक़्क़ी-पसंद मुसन्निफ़ीन की पहली कांफ्रेंस 1936 का मुकम्मल ख़ुतबा ए सदारत -अदब की ग़रज़ व ग़ायत (मक़सद)- "हमें हुस्न का मेयार बदलना होगा" 138

प्रेमचंद

कहानी

बिच्छू 157

रूमाना तबस्सुम

कविता/नज़्म

इफ़्तिख़ार बुख़ारी की तीन नज़्में 179

ऐसा लगता है… 188

सलीम सरमद

लहरें चालाक हैं ! 190

नैय्यर उमर अंसारी

कला/कल्चर

फिल्म समीक्षा : ‘होमबॉउन्ड’ 192

पीयूष कौल

धरोहरों का तहफ़्फ़ुज़ 202

रफ़त फ़ातिमा

मुग़ल दौर में चित्रकला: भाग 1 205

असग़र मेहदी

पुस्तक समीक्षा

'इर्तिबात- सैयद ऐनैन अली हक़ 212

मालिक ए अश्तर

रत्ति- नॉवेल का नाम: ज़ीफ़ सैयद 216

अहमद हुसैन मुजाहिद

क़ाहिरा ट्राइलॉजी- नजीब महफ़ूज़ 219

अली अलहद

तज़किरा की सिफ़ारिश-6 किताबें 222

संपादकीय

साल 2026 का आग़ाज़ अदबी लिहाज़ से एक बड़े ग़म का सामान लेकर आया जो वीरेंद्र यादव के सानिहा ए इर्तिहाल की सूरत में पेश आया। यह सिर्फ़ अदबी दुनिया का ख़सारा नहीं है जहां तन्क़ीद की सिनफ़ मुतास्सिर हुई है बल्कि एक अज़ीम तहरीक मजरूह हुई है। उनकी वफ़ात के बाद अदबी व दीगर गोशों से ताज़ियत का सिलसिला जारी रहा। लेकिन, कुछ ऐसा नहीं हुआ जो उनकी याद को मुस्तक़िल तौर पर बरक़रार रखने में मददगार साबित होता।

बहरहाल यहां पर दो हिदायात का ज़िक्र ज़रूरी है जो उन्होंने हमारे जरीदे 'तज़किरा' के हवाले से मरहमत फ़रमायीं थीं। जैसा कि हम सब के इल्म में है कि आँजहानी वीरेंद्र यादव प्रेम चंद पर एक हतमी कलाम की हैसियत रखते थे और जब भी 'क़लम के सिपाही' पर कहीं से कोई मनफ़ी तंक़ीद सामने आती तो वह 'दामे-दिरमे-क़दमे-सुख़ने' नज़र आते।

दाएं बाज़ू के हलक़ों में एक मज़मूम कोशिश होती रही है कि कैसे प्रेम चंद को उनकी अपनी फ़िक्री हम-आहंगी से मुताबिक़त रखने वाले अदीब के तौर पेश जाये! हालात इस इंतिहा तक पहुँच गए कि रिफ़ाये आम क्लब लखनऊ में अप्रैल 1936 में सज्जाद ज़हीर की ईमा पर मुनक़्क़िद, तरक़्क़ी-पसंद तहरीक के पहले जलसे में प्रेम चंद के सदारती ख़ुतबे पर सवाल उठने लगे और यहां तक कहा और लिखा जाने लगा कि प्रेम चंद ने उस जलसे में शिरकत ही नहीं की थी। वीरेंद्र यादव ने इस क़बीह कोशिश पर तमाम सतहों पर रद्द-ए-अमल दिखाते हुए एक नोट जारी करते हुए इस 'मुजरीमाना हरकत' का मुक़ाबला किया था।

उनकी अचानक मौत से कुछ माह पहले उनके घर पर एक यादगार मुलाक़ात हुई। उस मुलाक़ात में उनकी पहली हिदायत यह थी प्रेम चंद का सदारती ख़ुतबा उसकी असल शक्ल

में नागरी में शाया किया जाये ताकि इस कज़िय्ये (प्रकरण) का सद्देबाब हो सके और ग़बी इन्सान भी दाएं बाज़ू की ग़लतबयानी के दाम में ना फंस सके। उनकी इस हिदायत पर तहक़ीक़ का काम शुरू हुआ और असल ख़ुतबे का टेक्स्ट हासिल हो गया। इसके बाद वीरेंद्र यादव जी की हिदायत पर 10 सफ़हात पर मुश्तमिल इस ख़ुतबे को नागरी रस्मुल-ख़त में मुंतक़िल कर के उसे 'तज़किरा' के इस शुमारे में शामिल किया जा रहा है।

वीरेंद्र यादव जी की दूसरी हिदायत ये थी जिस तरह से मौजूदा निज़ाम काम कर रहा है और इल्म के तमाम शोबे एक ख़ास मकतब ए फ़िक्र के क़ब्ज़े में आते जा रहे हैं उस के मदे-नज़र हमारा वह इल्मी सरमाया जो दाएं बाज़ू की फ़िक्री तहरीक और और बाएं बाज़ू के लिसानी भेदभाव की नीतियों के रास्ते में रुकावट बन सकता है, इस से पहले कि वो नापैद हो जाये उसका तहफ़्फ़ुज़ लाज़िमी है। इसके लिए हम सबको मुख़्तलिफ़ सतहों पर जंगी पैमाने पर कोशिश करना होगी। ज़ाहिर है कि यह एक मुसलसल अमल है, और हमें अपनी इस्तिताअत के मुताबिक़ अमल करना होगा। इस में हुई ग़फ़लत और कोताही का नुक़्सान हमारी अगली पीढ़ियों को भुगतना होगा

इज़हार कालम में असरी इशूस - ब्लासफ़ेमी, बशीर बद्र की वफ़ात, ख़ुदा के वजूद को लेकर हुए डिबेट और ईरान पर अमरीकी-इसराइली हमले पर बात की गई है। ब्लासफ़ेमी का दायरा अब सिर्फ़ मज़हबी जज़्बात को मजरूह करने तक महदूद नहीं रह गया है। बर्रे सग़ीर में अब इसका दायरा बहुत वसी' कर दिया गया है। मज़हबी शख़्सियतों के अलावा तारीख़ी और मौजूदा सियासी नेताओं पर बात करना मुश्किल हो गया है। मशहूर शायर बशीर बद्र के इंतिक़ाल की ख़बर ने अदब, शायरी और मोहब्बत करने वाले दिलों को सोगवार कर दिया है।

जावेद अख़तर और मुफ़्ती शमाइल के बीच ईश्वर/ख़ुदा के वजूद पर जो बहस हुई उसके कई मतलब निकलते हैं, उन पर एक ग़ैर-जानिबदर तजज़िया ज़रूरी है। ईरान पर हमले के बाद जो सूरते हाल सामने आई है, क्या वह किसी ट्रैन्ज़िशन की अलामत है? क्या हंगरी चुनाव सिर्फ़ हंगरी की जम्हूरियत की तारीख़ में अहम है? क्या भारत समेत सभी देशों की दक्षिणपंथी रुजहान के ज़वाल के लिए इब्तिदाई नुक़ता साबित हो सकेगा? ये तमाम बातें हमको फ़िक्री दावत देती हैं और इख़्तिलाफ़ को सराहने का इसरार करती हैं।

विमर्श के तहत असग़र मेहदी के लेख द सैटेनिक वर्सेस, ओरिएंटलिज़्म और इस्लाम की एंग्लो-सैक्सन समझ के दूसरे हिस्से में अरब-इस्लाम के तालुक़ से ईसाई रहिबों के मुख़ालिफ़ाना नज़रियात के इरतिक़ाई दौर का तजज़िया पेश किया गया है, जिनसे हम आम तौर पर वाकिफ़ नहीं हैं। मुहम्मद आमिर का लेख 'गांधी और जिन्नाह संवाद: क़ौमियत की बुनियाद का त'अय्युन', इस बात को ख़त ए रशीदा करता है कि जिन्नाह का नज़रिया ए रियासत कितना खोखला था। राकेश कुमार मिश्रा का मज़मून 'ऋगवेदिक काल – एक क़बीलाई तहज़ीब', मौजूदा दौर में काफ़ी मानवीयत का हामिल है, कि कैसे एक ट्राइबल सोसायटी दैवीय आस्थाओं तक का सफ़र तय करती है।

31 मार्च 2026 को वीर विनोद छाबड़ा जी हमसे हमेशा के लिए विदा हो गए। साथी अशोक वर्मा, जो सुक़रात बैठकी के फ़ा'ल सदस्य हैं, ने उनको 'आह-वीर जी' के उनवान से ख़िराज ए अक़ीदत पेश किया है।

इस शुमारे का एक और आकर्षण है रमेश दीक्षित का मज़मून - प्रतिरोध का अप्रतिम नायक : टीपू सुल्तान, टीपू सुल्तान अपने वक़्त से काफ़ी आगे थे लेकिन वह आज भी नाइंसाफ़ी का शिकार है। यह लेख टीपू का तारीख़ के ज़ाविये से एक अहम तजज़िया है।

रूमाना तबस्सुम की कहानी “बिच्छू” मौजूदा सियासी मंज़रनामे का अच्छा और ज़मीनी बयान है। फ़ातिमा मुहम्मद शानुन की अरबी कहानी “दफ़न करने वाली” एक अबदी हक़ीक़त से दो चार कराती है।

मौजूदा दौर में इफ़्तिख़ार बुख़ारी का कलाम काफ़ी मानवीयत रखता है। उनका वैचारिक सफ़र बिना डगमगाये हनोज़ जारी है। इस शुमारे में उनकी चार नज़्में और एक ग़ज़ल शामिल हैं। नैय्यर उमर अंसारी और सलीम सरमद किसी तअ’रुफ़ के मोहताज नहीं हैं।

पीयूष गोयल ने फिल्म ‘होमबॉउन्ड’ की समीक्षा के ज़रिये हिंदुस्तान में सांप्रदायिकता और जातिवाद का ज़मीनी नक़्शा पेश किया है। ‘धरोहरों का तहफ़्फ़ुज़’ रियासत ए यूपी में धरोहरों के हाल- ज़ार का नौहा है। मुस्लिम समाज में चित्रकला को लेकर काफ़ी शक ओ शुबहात हैं, इस विषय पर ‘मुग़ल काल में चित्रकला’ जैसे लेखों की ज़रूरत है।

सैयद ऐनैन अली हक़ की नई किताब ‘इर्तिबात’ जो इंटरव्यूज़ का मजमुआ है, की समीक्षा उनके दोस्त और मौजूदा दौर के बेहतरीन नक़्क़ाद मालिक ए अश्तर ने की है।

मोहम्मद अली जिन्ना की दो पत्नियां थीं। पहली पत्नी एमिबाई जिन्ना (विवाह 1892, मृत्यु 1893) थीं, जिनसे उन्होंने कम उम्र में शादी की थी। उनकी दूसरी और सबसे चर्चित पत्नी रतनबाई पेटिट (जिन्हें 'रुट्टी' के नाम से जाना जाता था) थीं। नॉवलनिगार ज़ीफ़ सैयद की नॉवेल ‘रत्ति’, एक मार्मिक बयान है। नॉवेल की एक समीक्षा अहमद हुसैन मुजाहिद ने की है, जो क़ारी पर अलग असर डालती है। नोबल इनाम याफ़्ता नजीब महफ़ूज की क़ाहिरा ट्रायलॉजी की समीक्षा को इस अंक में शामिल किया गया है। तज़किरा की सिफ़ारिश-6 किताबें जैसा कालम काफ़ी पसंद किया जा रहा है।

‘तज़किरा’ को अपने लेखों से सजाने वाले सत्यम वर्मा ने इस अंक के लिए ईरान पर एक जामे’ लेख लिखने का वायदा किया था, और लेख तक़रीबन मुकम्मल भी हो गया था, लेकिन 17 अप्रैल को उन्हें हिरासत में ले लिया गया। सत्यम वर्मा जैसे बुद्धिजीवी, पत्रकार, लेखक, अनुवादक के साथ जो बर्ताव किया गया वह क़ाबिल ए क़ुबूल नहीं है। हम उनकी जल्द और बिना शर्त रिहाई का पुरज़ोर मुतालबा करते हैं।

हम परवरिश लौह-ओ-क़लम करते रहेंगे

जो दिल पे गुज़रती है रक़म करते रहेंगे

हाल ही में हुए असेंबली चुनावों के नतीजों पर तजज़ियाकारों ने इतना लिख दिया है कि ज़रूरत तो महसूस नहीं होती, लेकिन बग़ौर देखने पर ऐसा महसूस होता है कि बहुत से बातें या बारीकियाँ हम छोड़ दी गई हैं। कुछ बातें हैं जो साफ़ नज़र या रही हैं- जैसे असम, बंगाल और पांडेचरी में नेशनल डेमोक्रेटिक अलायंस की शानदार जीत, केरल और तमिलनाडु में उसकी सीटों में आई कमी, तमिलनाडु में डीएमके की हार। क्या वाक़ई में सब कुछ ऐसा है? कुछ और भी है जो हम ‘मिस’ कर रहे हैं। क्या यह नतीजे भारत में डेमोक्रेसी को मज़बूती फ़राहम किये जाने वाले किसी अमल की शक्ल में देखे जा सकते हैं?

किसी भी मुल्क की जम्हूरियत वहाँ के ‘इलेक्शन प्रोसेस’ से मापी जाती है, चुनावी नतीजों से नहीं! तो फिर ग़ौर करें कि इन चुनावों के दौरान सभी इदारों का अमल कितना जम्हूरि और ग़ैर-जानिबदार था। इस असली कसौटी पर ये सभी चुनाव गंभीर रूप से नाक़िस साबित हुए हैं।

कुछ एक्सपर्ट कहते नज़र आए कि बदउनवानी, रेप, बेरोज़गारी या बुनियादी ज़रूरतों जैसे मुद्दों के पसमंज़र में चीज़ों को देखें और समझें, जबकि ख़ास चुनावों में स्पेशल इंटेन्सिव